सूकर ज्वर (स्वाइन फीवर)

परिचय

- सूकरों में पाया जाने वाला यह एक अत्यन्त घातक संक्रामक विषाणु जनित रोग है, जो कि महामारी का रूप ले सकता है। इससे प्रभावित पशु में तीव्र ज्वर देखा जाता है ।
- यह विषाणु हिमीकृत सूकर मांस में कई वर्ष तक जीवित रह सकता है।
- इस रोग का संचरण रोग ग्रस्त सूकरों के सम्पर्क मे आने से, उनके एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने तथा बिना पके सूकर मांस को खाने से होता है।
- बाड़े में पशुओं के उपयोगार्थ प्रयुक्त उपकरणों के द्वारा भी यान्त्रिक रूप से विषाणु का संचरण हो सकता है।
- शूकर शालाओं में काम करने वाले सेवको द्वारा भी रोग का संचरण हो सकता हैं।

क्लासिकल शूकर ज्वर से संक्रमित शूकर

लक्षण

- यह रोग अति तीव्र, कम तीव्र व चिरकालिक रूप में पाया जाता है।
- रोग का अति तीव्र एवं तीव्र रूप घातक होता है और सूकरों में भारी मृत्यु का कारण बनता है।
- रोग का निषेचन काल 2–6 दिन होता है तथा 10–20 दिन में रोगी पशु की मृत्यु हो सकती है।
- प्रभावित सूकरों में दस्त, शरीर पर लाल चकत्ते, त्वचा का नीला पड़ना (विशेष रूप से जोड़ों पर) देखा जा सकता है।
- प्रभावित सूकरों में असन्तुलन और मस्तिष्क प्रभावित होने की स्थिति में दौरे पड़ना भी देखा जा सकता है।
- शव परीक्षण के समय मृत पशु में छोटी एवं बड़ी आंत के जोड़ पर बटन के रूप में अल्सर पाये जाते हैं।

क्लासिकल शूकर ज्वर से संक्रमित शूकर

चिकित्सा

- इस रोग का कोई इलाज नही हैं सक्रंमित पशुओं को बाड़े से अविलंब हटा देना चाहिये।
- रोग के दौरान अन्य संक्रमण रोकने के लिए ऐन्टिबायोटिक का प्रयोग कर सकते हैं।

क्लासिकल शूकर ज्वर से संक्रमित शूकर

रोकथाम

- बाड़े में साफ–सफाई की व्यवस्था करें एवं सभी उपकरणों को भी विसंक्रमित करें।
- रोगी पशुओं एवं तीमारदारों के आवा–गमन पर रोक लगायें।
- रोग संभावी क्षेत्रों में टीकाकरण एंव टीकाकरण जन्म से 3–4 महीने के बाद ही करवाये।
- सूकर–मांस को अच्छी तरह पका कर ही उपयोग में लायें।
- कमजोर पशुओ को रोग के संक्रमण के समय टीका नही लगना चाहिये।
- नये खरीदे हुये शूकरो को एक निश्चित समय तक संगरोध में रखना चाहिये।
- घरेलू शूकरो को जंगली शूकरो के साथ सम्पर्क में नही आने देना चाहिये।
- आसपास के क्षेत्रों में संक्रमण फैलने से बचाने के लिए संभावित क्षेत्रो में शूकरों की निगरानी जरूरी है।

लेखक :

डॉ0 अशोक कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, जैविक मानकीकरण विभाग
डॉ0 त्रिवेणी दत्त, संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक), समविश्वविद्यालय
डॉ0 रूपसी तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक
डॉ0 अभिषेक, वैज्ञानिक (एस0एस0) जीवाणु एवं कवक विज्ञान विभाग

भाकृअनुप
ICAR

NAHEP

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

IVRI

कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ
भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.

Printed by : ADIL-E-OFFICE MOB.: +91- 8395804304